आर्कादी गैदार

चूक और गेक

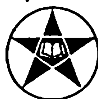


आर्कादी गैदार

चूक और गेक


राडुगा प्रकाशन · मास्को


पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५


राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

अनुवादिका : उर्मिला सहाय

संपादक : नरेश वेदी

चित्रकार : द० दुबीन्स्की

Аркадий Гайдар
ЧУК И ГЕК
на языке хинди

A. Gaidar
CHUCK AND GECK
In Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

ISBN 5-05-002409-9



किसी समय की बात है कि नीले पहाड़ों के पास जंगल में एक आदमी रहता था। वह बहुत मेहनत करता था, मगर फिर भी उसका काम कभी ख़त्म नहीं होता था और उसे छुट्टियों में घर जाने की भी फ़ुरसत नहीं मिल पाती थी।

अंत में जब जाड़ा आया, तो अकेलापन उसे इतना खलने लगा कि उसने अपनी पत्नी को लड़कों के साथ अपने पास आने को लिख भेजा।

उसके दो लड़के थे – चूक और गेक।

वे अपनी मां के साथ एक बड़े शहर में रहते थे, जो बहुत ही दूर था। इस शहर से सुंदर शहर पूरी दुनिया में दूसरा नहीं था।

रात-दिन इस शहर की मीनारों पर लाल सितारे जगमगाया करते थे।

इस शहर का नाम मास्को था।

जब डाकिया चिट्ठी लेकर सीढ़ियां चढ़ रहा था, तो चूक और गेक लड़ने में, हाथापाई करने में लगे हुए थे।

मुझे याद नहीं है कि वे किस बात के लिए लड़ रहे थे। मेरे ख़याल से चूक ने गेक की ख़ाली दियासलाई ले ली थी, या शायद गेक ने चूक की बूट-पालिश की ख़ाली डिबिया ले ली थी।

दोनों भाई एक दूसरे को एक-एक घूंसा लगा चुके थे और दूसरा लगाने को ही थे कि दरवाज़े की घंटी बज उठी। उन्होंने एक दूसरे की ओर सहमकर देखा। उन्होंने सोचा कि यह माताजी हैं। और वह दूसरी माताओं जैसी नहीं थीं। लड़ने के लिए वह उन्हें कभी डांटती-फटकारती नहीं थीं। वह बस दोनों अपराधियों को अलग-अलग कमरों में पूरे एक घंटे, या दो घंटे भी अकेले रहने देतीं और दोनों को साथ नहीं खेलने देतीं। और एक घंटे में पूरे साठ मिनट होते हैं। और दो घंटों में तो इससे भी अधिक मिनट होते हैं।

इसलिए लड़कों ने झटपट अपने आंसू पोंछे और दरवाज़ा खोलने के लिए लपके।

लेकिन यह माताजी थीं ही नहीं। यह तो डाकिया था, जो एक चिट्ठी लेकर आया था।

वे चिल्लाये – "अरे वाह! पिताजी की चिट्ठी! पिताजी की चिट्ठी! वह जल्दी ही आते होंगे।"

वे ख़ुशी से सोफ़े पर नाचने-कूदने और कलाबाज़ियां खाने लगे। मास्को चाहे दुनिया में सबसे अच्छा शहर ही क्यों न हो, फिर भी पिताजी पूरे एक साल से बाहर हों, तो वह भी नीरस हो सकता है।

वे इतने ख़ुश और जोश में भरे थे कि माताजी के आने की आहट भी उन्हें नहीं मिली।



माताजी ने जब अपने दोनों प्यारे बच्चों को पीठ के बल लेटे हुए जूतों से दीवाल को इस तरह धमाधम पीटते हुए देखा, जिससे लटकी हुई तसवीरें तक हिल रही थीं और घड़ियाल तक घनघना रहा था, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही।

लेकिन जब माताजी को यह पता चला कि यह ख़ुशी क्यों मनायी जा रही है, तो उन्होंने अपने बच्चों को डांटा नहीं।

इसके बजाय उन्होंने उन्हें सोफ़े पर से हटाया, अपना समूरी कोट उतारा और अपने बालों पर पड़ी बर्फ़ के फाहों को झाड़े बिना ही वह पत्र पर टूट पड़ीं। बर्फ़ के फाहे गलकर उनकी काली भौंहों पर मोती के दानों की तरह चमकने लगे थे।

जैसा कि सभी जानते हैं, पत्र ख़ुशी के और दुख के, दोनों ही हो सकते हैं। इसीलिए जब वह पत्र पढ़ रही थीं, तो चूक और गेक माताजी के चेहरे पर के भावों को पढ़ने की कोशिश कर रहे थे।

पहले उन्होंने भौंहें चढ़ा लीं, और दोनों लड़कों ने भी वैसा ही किया। फिर वह मुसकुरायीं। इसका मतलब था कि पत्र ख़ुशी का था।

पत्र को एक तरफ़ रखते हुए उन्होंने कहा – "तुम्हारे पिताजी नहीं आ रहे हैं। उन्हें बहुत काम है और वह घर नहीं आ सकते।"

चूक और गेक ने परेशान होकर एक दूसरे की ओर देखा। यह पत्र तो बहुत ही दुखभरा निकला।

दूसरे ही क्षण वे मुंह फुला रहे थे और माताजी की तरफ़ गुस्से से देख रहे थे, पर वह किसी अनजान कारण से मुसकुरा रही थीं।

उन्होंने आगे कहा – "वह तो नहीं आ रहे हैं, पर उन्होंने हमें अपने पास बुलाया है।"

इस पर चूक और गेक सोफ़े पर से उछल पड़े।

माताजी ने लंबी सांस लेते हुए कहा – "अजीब आदमी हैं। कह देना आसान है कि आ जाओ, जैसे इसके लिए बस बैठे ट्राम में और चल दिये।"



चूक ने कहा – "क्यों नहीं! अगर वह बुलाते हैं, तो चलो, बैठें ट्राम में और चल दें।

मताजी ने कहा – "बेवक़ूफ़ कहीं के! वहां जाने के लिए रेल में हज़ारों किलोमीटर जाना होता है। इसके बाद बर्फ़-गाड़ी पर चढ़कर ताइगा में होकर जाना होता है। और ताइगा में भेड़िये या भालू से मुठभेड़ होना तय है। भई वाह, कैसा अजीब विचार है! ज़रा खुद ही सोचो।"

लेकिन चूक और गेक ने इसके बारे में क्षणभर भी नहीं सोचा। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ़ हज़ार क्या, सैकड़ों हज़ार किलोमीटर जाने को तैयार हैं। हम किसी चीज़ से नहीं डरते – हम बहादुर हैं। क्या कल ही हमने उस डरावने कुत्ते को पत्थरों से मारकर बग़ीचे से नहीं भगा दिया था?

वे बक-झक करते, हाथ घुमाते, पैर पटकते, इधर-उधर उछलते-कूदते रहे, जबकि माताजी चुपचाप बैठी उनकी बातें सुनती रहीं। फिर अचानक वह ज़ोर से हंसने लगीं और उन्होंने दोनों को अपनी बांहों में समेटा और ज़ोरों से एक चक्कर देकर सोफ़े पर पटक दिया।

सच पूछो, तो ऐसी चिट्ठी पाने की उम्मीद उन्हें काफ़ी अरसे से थी और अब वह चूक और गेक को चिढ़ा रही थीं, क्योंकि हंसी-मज़ाक़ करना उन्हें अच्छा लगता था।

* * *

सफ़र की तैयारी करने में माताजी को एक हफ़्ता लग गया। इस बीच चूक और गेक ने भी समय बरबाद नहीं किया।

चूक ने रसोईघर के एक चाकू को कटार में बदल लिया, जबकि गेक ने एक चिकनी लकड़ी खोजकर उसमें एक कील ठोक दी और लो, अब उसके पास एक ऐसा भाला हो गया था कि अगर उसे भालू के कलेजे में घुसेड़ देता, तो वह अवश्य ही तुरंत मरकर गिर जाता; यह बात दूसरी है कि इसके लिए यह ज़रूरी था कि पहले कोई और उस जानवर के चमड़े को छेद लेता।

आख़िर सभी तैयारी हो गयी। सामान बंध गया। दरवाज़े में एक दोहरा

ताला लगा दिया गया, ताकि चोर न आने पायें। आलमारी से डबल रोटी के और आटे-अनाज के कण झाड़ दिये गये, जिससे चूहे न आने पायें। और तब माताजी अगले दिन जानेवाली गाड़ी के टिकट लेने चली गयीं।

वह गयीं और चूक और गेक में झगड़ा हो गया।

काश कि उन्हें पता होता कि इस झगड़े का परिणाम क्या होनेवाला है, तो वे उस दिन ढंग से रहते।

चूक के पास, जो मितव्ययी था, धातु का एक चपटा डिब्बा था, जिसमें वह चाय की पुड़ियाओं की पन्नी और मिठाइयों पर लिपटे वे काग़ज़ रखता था, जिन पर टैंक, हवाई जहाज़ या लाल फ़ौज के सिपाहियों की तसवीरें होती थीं। तीरों पर लगाने के लिए चिड़ियों के पंख, चीनी जादू के खेल के लिए घोड़े के बाल और कुछ दूसरी चीज़ें भी, जो उतनी ही ज़रूरी थीं, वह उसी डिब्बे में रखता था।

गेक के पास वैसा कोई डिब्बा नहीं था। वैसे भी गेक लापरवाह था, पर गाने वह बेशक गा सकता था।

तो हुआ यह कि चूक तो रसोईघर में अपने क़ीमती डिब्बे में रखी चीज़ों की छंटाई कर रहा था और गेक दूसरे कमरे में गा रहा था कि तभी डाकिया अंदर आया और उसने चूक को माताजी के नाम एक तार दिया।

चूक ने तार को अपने डिब्बे में रखा और यह देखने चला कि गेक ने गाना क्यों बंद कर दिया है और यह क्यों चिल्लाने लगा है:

बोला धावा, हल्ला, हुर्रा!
अब दुश्मन को जीत लिया!

उत्सुकतावश चूक ने दरवाज़ा खोला और जो देखा, उससे उसके हाथ गुस्से से कांपने लगे।

कमरे के बीच में एक कुरसी थी और उसकी पीठ पर भाले से चिथड़े-चिथड़े हुआ एक अख़बार लटका हुआ था। इतना ही होता, तो ज़्यादा बुरा नहीं था, पर वह शैतान गेक माताजी के जूतों के गत्ते के पीले डिब्बे को भालू मानकर पूरे ज़ोरों से उस पर भाला चला रहा था। और उसी डिब्बे



में चूक ने टीन की एक सीटी, अक्तूबर क्रांति उत्सव के तीन रंगीन बिल्ले और कुछ पैसे भी रखे हुए थे – सब मिलाकर ४६ कोपेक, जिन्हें उसने गेक की तरह उड़ाया नहीं था, बल्कि अपनी लंबी यात्रा के लिए बचा रखा था।

गत्ते के टूटे हुए डिब्बे को देखते ही चूक ने गेक के हाथों से भाला छीन लिया और अपने पैरों पर उसे तोड़कर उसके टुकड़ों को ज़मीन पर फेंक दिया।

लेकिन गेक बाज़ की तरह चूक पर झपटा, उसके धातु के डिब्बे को उसके हाथों से छीन लिया और उछलकर खिड़की पर चढ़कर उसे बाहर फेंक दिया।

चूक के ग़ुस्से की हद न रही। उसने ज़ोरों से चीख़ मारी और "तार! तार!" चिल्लाता हुआ टोपी भी पहने बिना ही घर के बाहर भागा।

यह समझकर कि कुछ गड़बड़ है, गेक भी उसके पीछे हो लिया।

लेकिन धातु के उस डिब्बे की खोज बेकार ही रही, जिसमें बिना खुला हुआ तार था।

वह या तो बर्फ़ के किसी ढेर में पड़ गया था, या रास्ते में गिर गया था और किसी ने उधर से जाते हुए उसे उठा लिया था। किसी भी हालत में डिब्बा अपने बंद तार और दूसरे सारे ख़ज़ानों के साथ हमेशा के लिए खो गया था।

* * *

घर पर चूक और गेक बहुत देर तक चुप रहे। सुलह तो वे कर भी चुके थे, क्योंकि वे जानते थे कि माताजी उन दोनों को ही सख़्त सज़ा देंगी। गेक से पूरा एक साल बड़ा होने के कारण चूक को डर था कि ज़्यादा सज़ा उसी को मिलेगी, इसलिए वह बड़े सोच में था।



"सुन, गेक! अगर तार की बात माताजी को बतायें ही न, तो? आख़िर तार है ही क्या? उसके बिना भी हम मज़ा ले सकते हैं।"

"झूठ नहीं बोलना चाहिए," गेक ने कहा। "जब भी हम झूठ बोलते हैं, माताजी और ज़्यादा नाराज़ हो जाती हैं।"

"लेकिन हम झूठ बोलें ही क्यों?" चूक ने ख़ुश होकर कहा। "अगर वह पूछती हैं – 'तार कहां है?' तब हम बता देंगे। लेकिन अगर वह पूछें ही नहीं, तो हम ही क्यों कहें?"

"चलो, ठीक है," गेक राज़ी हो गया। "अगर झूठ न बोलना पड़े, तो वैसा ही करेंगे, जैसा तू कहे। बात तो बढ़िया है।"

उन्होंने फ़ैसला किया ही था कि माताजी बहुत ख़ुश होती हुई वापस आ गयीं, क्योंकि उन्हें रेल के अच्छे टिकट मिल गये थे। फिर भी यह उनसे छिपा न रहा कि उनके प्यारे बेटों के मुंह लटके हुए और आंखें भीगी हुई हैं।

अपने कोट से बर्फ़ झाड़ते हुए उन्होंने कहा – "तो मेरे प्यारे नागरिको, यह बताओ कि लड़ाई किस बात पर हुई थी?"

"कोई लड़ाई हुई ही नहीं," चूक ने कहा।

गेक ने गवाही दी – "बेशक नहीं हुई। हम लड़ने ही वाले थे, मगर हमने सोचा कि न लड़ना ही अच्छा रहेगा।"

माताजी ने कहा – "यह हुई बात! मुझे इस तरह सोचना ही अच्छा लगता है।"

उन्होंने अपना कोट उतार दिया, सोफ़े पर बैठ गयीं और उन्हें करारे-करारे हरे टिकट दिखाये – एक बड़ा और दो छोटे। कुछ देर बाद उन्होंने रात का खाना खाया। फिर शोर दब गया, बत्ती बुझा दी गयी और वे सभी सो गये।

माताजी तार के बारे में कुछ नहीं जानती थीं और इसीलिए, क़ुदरती तौर पर, उन्होंने उसके बारे में पूछा भी नहीं।

* * *

अगले दिन वे चल पड़े। मगर चूंकि ट्रेन स्टेशन से काफ़ी रात को निकली थी, इसलिए खिड़कियां धुंधली थीं और चूक और गेक को कोई दिलचस्प चीज़ नज़र नहीं आयी।

रात को गेक को प्यास लगी और वह उठ बैठा। यद्यपि छत की छोटी बत्ती बुझा दी गयी थी, गेक के चारों ओर की वस्तुएं – मेज़ पर सफ़ेद कपड़े पर रखा ऊपर-नीचे नाचता हुआ गिलास, पीला संतरा, जो अब हरा लग रहा था, और गहरी नींद में पड़ी माताजी का चेहरा – सभी नीली रोशनी में नहायी हुई थीं।

बर्फ़ जमी खिड़की से गेक ने चांद देखा। चांद बहुत ही बड़ा था, मास्को के चांद जैसा ज़रा भी नहीं था। अब उसे यक़ीन हो गया कि गाड़ी ऊंचे पहाड़ों पर से गुज़र रही है, जहां से चांद काफ़ी नज़दीक दीखता है।

उसने माताजी को जगाया और पानी मांगा। लेकिन उन्होंने किसी ख़ास वजह से उसे पानी देने से इन्कार किया और उसके बजाय ज़रा-सा संतरा खा लेने को कहा।

गेक ने मुंह फुला लिया, लेकिन ज़रा-सा संतरा ले लिया। अब उसे सोने की इच्छा बिलकुल ही नहीं हो रही थी। उसने चूक को जगाने के लिए हिलाया। चूक बस नाराज़ी से कुलबुलाया और सोता ही रहा।

गेक ने अपने नमदे के जूते पहने, दरवाज़े को खोला और गलियारे में निकल आया।

गलियारा संकरा और लंबा था। दीवालों से कुरसियां लगी हुई थीं, जो किसी के उठते ही धड़ाक से दीवाल में सट जाती थीं। गलियारे की तरफ़ दस दरवाज़े और खुलते थे। सभी दरवाज़े चटक लाल थे और सभी में पीतल के चमकते हुए दस्ते लगे हुए थे।

गेक एक-एक करके हर सीट पर बैठता गया और आख़िर सभी सीटों पर बैठ लिया। लेकिन तभी अपनी लालटेन लिये कंडक्टर आया और उसने गेक को डांटा कि वह हल्ला-गुल्ला कर रहा है, जबकि दूसरे सभी सो रहे हैं।



कंडक्टर के जाते ही गेक अपने डिब्बे की तरफ़ लपका। बहुत कोशिश करके उसने दरवाज़े को खोला और फिर धीरे-से बंद कर दिया, जिससे माताजी की नींद न खुल जाये और फिर उछलकर नरम बिछावन में जा घुसा। चूक को पूरे बिछावन पर पसरे हुए देख उसने उसे हटाने के लिए उसकी बग़ल में कोहनी गड़ा दी।

लेकिन यह क्या! सनई बालों और गोल सिरवाले चूक की जगह पर गेक ने देखा क्या – एक मूंछोंवाले और ग़ुस्से से तमतमाते अनजान आदमी का मुंह! उसने गेक की तरफ़ देखा और गरजते हुए बोला :

"यह कौन मुझे धकेल रहा है?"

गेक इतने ज़ोर से चीख़ा कि सभी यात्री अपनी-अपनी जगहों से उतर पड़े। बत्ती जलायी गयी और जब गेक ने देखा कि वह दूसरे डिब्बे में आ गया है, तो वह पहले से भी ज़ोर से चीख़ने-चिल्लाने लगा।

जब सबों को पता चला कि हुआ क्या है, तो वे हंसने लगे। मूंछोंवाले

आदमी ने अपनी पतलून और क़मीज़ पहनी और गेक को उसके डिब्बे में पहुंचा दिया।

गेक अपने कंबल में जा घुसा और चुप हो गया। गाड़ी हिल रही थी और हवा कराह रही थी।

अनजान बड़ा चांद फिर से अपनी नीली रोशनी नाचते हुए गिलास, सफ़ेद कपड़े पर पड़े पीले संतरे और अपने बेटे की हालत से अनजान माताजी के मुंह पर, जो नींद में किसी चीज़ पर मुसकुरा रही थीं, डाल रहा था।

अंत में गेक भी सो गया।

एक अनोखा सपना आया,
सपने में उसने यह पाया:
धीरे-धीरे चल दी गाड़ी,
औ' आवाज़ें पड़ीं सुनायी।
हर पहिये की खट-खट, खट्-खट,
ऊंची उठी, हवा में छायी।
डिब्बे भी अब शोर मचायें,
वे इंजन का साथ निभायें।
बोला सबसे पहला डिब्बा –
चलो, साथियो, बढ़े चलो।
बेशक छायी रजनी काली,
पर हमने कब मंज़िल टाली।
अंधकार से लोहा लो,
चलो, साथियो, बढ़े चलो।
और दूसरा डिब्बा बोला –
ओ इंजन के लैंप चमककर
कर दे ख़ूब उजाला।
शर्मा जाये स्वयं उषा भी,
और रश्मि की माला।

कहा तीसरे डिब्बे ने यह –
दहको, दहको अंगारो,
गूंजो तुम सीटी प्यारी।
छिक-छिक-छिक गाओ पहियो;
पूरब की है तैयारी।
औ' चौथा डिब्बा यह बोला –
सफ़र ख़त्म हो जाने पर ही,
शोर मचाना बंद करेंगे।
ऐसे शोर मचाते नील पर्वत पर
जा सभी चढ़ेंगे।

जब गेक जगा, तो पहियों ने बातें बंद कर दी थीं और नीचे बराबर खट-खटाखट कर रहे थे। बर्फ़ जमी खिड़की से सूरज दिखाई दे रहा था।



बैठने की जगहें साफ़-सुथरी कर दी गयी थीं। हाथ-मुंह धोकर बैठा चूक सेब खा रहा था, जबकि खुले दरवाज़े के पास खड़े माताजी और मूंछोंवाला फ़ौजी गेक के रात के कारनामों पर हंस रहे थे। चूक ने गेक को एक पेन्सिल दिखलायी, जो उसे उस फ़ौजी ने दी थी। पेन्सिल का सिरा पीले कारतूस का बना हुआ था।

लेकिन गेक को न जलन हुई और न लालच ही हुआ। सचमुच वह बहुत ही लापरवाह था। रात में न सिर्फ़ वह ग़लत डिब्बे में ही घुस गया था, बल्कि अभी तक वह याद भी नहीं कर पा रहा था कि उसने अपनी पतलून कहां रख दी है। हां, वह गा ज़रूर सकता था।

हाथ-मुंह धोने और माताजी को प्रणाम करने के बाद वह खिड़की के ठंडे शीशे से अपना चेहरा सटाकर देखने लगा कि वे लोग कैसी जगहों से गुज़र रहे हैं और वहां रहनेवाले क्या-क्या करते हैं।

चूक हर दरवाज़े पर जा-जाकर सभी यात्रियों से दोस्ती कर रहा था और वे उसे तरह-तरह की छोटी-छोटी चीज़ें भेंट में दे रहे थे, जैसे रबड़ की डाट, कील, छोटा-सा तार। इसी बीच गेक ने खिड़की से काफ़ी कुछ देख लिया।

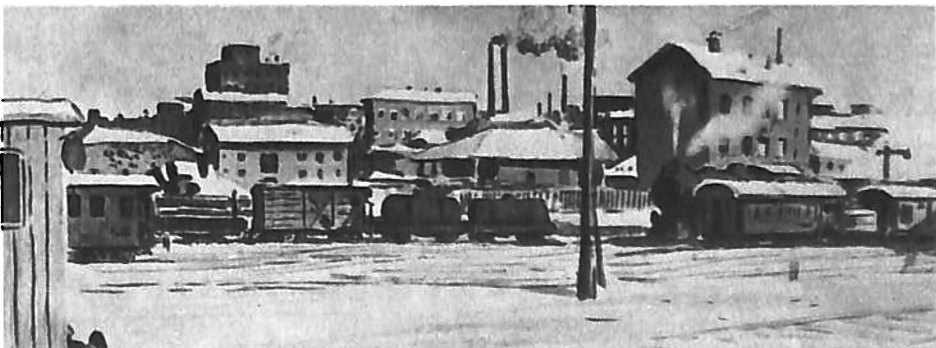
कुछ ही दूर पर जंगल में एक झोंपड़ी थी। एक छोटा लड़का, जो सिर्फ़ क़मीज़ और नमदे के बड़े-बड़े जूते पहने हुए और हाथ में एक बिल्ली लिये हुए था, फुदकता हुआ ओसारे पर आया। फ़िस्स! – और बिल्ली





फुलफुली बर्फ़ में उलटी आ गिरी। वह किसी तरह बर्फ़ से निकलकर ऊपर आयी और भाग गयी। अच्छा, उसने बिल्ली को इस तरह क्यों फेंका था? शायद इसलिए कि उसने तिपाई पर से कुछ झपट लिया था।

लेकिन अब झोंपड़ी, वह छोटा-सा लड़का और बिल्ली, सभी दूर रह गये थे। उसके बदले मैदान में एक कारख़ाना आ गया था। मैदान बिलकुल सफ़ेद था। धूएं की चिमनियां लाल थीं। धूआं काला था और खिड़कियों में पीली रोशनी थी। इस कारख़ाने में क्या बनता है? यह रहा संतरी का अड्डा और उसकी बग़ल में भेड़ की खाल का कोट पहने खड़ा एक संतरी। भेड़ की खाल के कोट की वजह से वह इतना बड़ा लग रहा था कि उसके हाथों की बंदूक़ तिनके जैसी लग रही थी। मगर देखना, उसके ज़्यादा पास जाने की हिम्मत मत करना!





और अब नाचता हुआ जंगल आ गया था। सामने के पेड़ तेज़ी से पीछे की तरफ़ भाग रहे थे, जबकि पीछे वाले धीरे-धीरे हिल रहे थे, जैसे कोई शांत बर्फ़ीली नदी उन्हें बहाती ले जा रही है।

गेक ने चूक को आवाज़ दी, जो उपहार में मिली कई चीज़ों के साथ अभी-अभी डिब्बे में लौटा था और अब दोनों साथ-साथ खिड़की के बाहर देखने लगे।

गाड़ी बड़े-बड़े, रोशनी में चमकते स्टेशनों से होकर गुज़र रही थी, जहां कम से कम सौ इंजन धूआं छोड़ते और आगे-पीछे आ-जा रहे थे। गाड़ी छोटे-छोटे स्टेशनों से भी गुज़र रही थी, जो मास्को में उनके घर के पास के नुक्कड़ की दूकान से ज़्यादा बड़े नहीं थे।

कच्ची धातुओं, कोयले और लकड़ी के बड़े-बड़े टुकड़ों से लदी हुई गाड़ियां बराबर से तेज़ी से गुज़र रही थीं।

एक बार वे गायों और सांड़ों से लदी हुई एक गाड़ी के बराबर से

निकले। उसका छोटा-सा इंजन बड़ा मज़ेदार था और उसकी सीटी पतली और तेज़ आवाज़ की थी। अचानक एक सांड़ ने ऐसी हुंकार मारी कि इंजन ड्राइवर घूमकर देखने लगा। उसने शायद सोचा हो कि पीछे से कोई बड़ा इंजन आ रहा है।

एक छोटे-से प्लेटफ़ार्म पर वे एक बहुत बड़ी बकतरबंद गाड़ी के बराबर रुके।

उसके सभी तरफ़ तिरपाल में लिपटी हुई तोपें थीं, जिनकी बाहर निकली नालें बड़ी डरावनी लग रही थीं। लाल फ़ौज के ख़ुशदिल सिपाही उसके चारों ओर खड़े हंस रहे थे और अपने को गरम रखने के लिए अपने पैर पटक रहे थे और दस्ताने पहने हुए हाथों से तालियां बजा रहे थे।

लेकिन चमड़े का कोट पहने एक आदमी उस बकतरबंद गाड़ी के पास चुप और सोच में डूबा खड़ा था। चूक और गेक ने तय किया कि यह आदमी कमांडर है।

सचमुच रास्ते में उन्होंने बहुत-सी चीज़ें देखीं। बस, बुरी बात यही थी कि बाहर आंधी चल रही थी, जिससे खिड़कियां बार-बार बर्फ़ से ढंक जाती थीं।

अंत में एक सुबह उनकी गाड़ी एक छोटे-से स्टेशन पर रुकी।

माताजी ने जैसे ही चूक, गेक और सामान को प्लेटफ़ार्म पर उतारा कि गाड़ी फिर चल पड़ी।

थैले बर्फ़ पर इकट्ठे कर दिये गये। जल्दी ही लकड़ी का प्लेटफ़ार्म ख़ाली हो गया, लेकिन पिताजी कहीं भी नहीं दिखायी दिये।

माताजी पिताजी पर बहुत ही नाराज़ हुईं। थैलों को बच्चों के ज़िम्मे करके माताजी यह जानने के लिए बर्फ़-गाड़ी चलानेवालों के पास गयीं कि उनके लिए कौन-सी गाड़ी भेजी गयी है, क्योंकि पिताजी के रहने की जगह पहुंचने के लिए उन्हें अभी भी सौ किलोमीटर ताइगा में से होकर जाना था।

माताजी बड़ी देर तक ग़ायब रहीं। इसी समय देखने में ही एक मरखना बकरा वहां आ पहुंचा। पहले वह बर्फ़ से जमी लकड़ी के एक कुंदे की छाल



को खाता रहा, फिर वह बहुत ही डरावनी आवाज़ में मिमियाने लगा और चूक और गेक की ओर घूरने लगा। चूक और गेक जल्दी से थैलों के पीछे छिप गये। कौन जाने कि यहां के बकरे क्या चाहते हैं!

लेकिन इतने में ही माताजी आ गयीं। वह बहुत ही उदास लग रही थीं। उन्होंने कहा कि पिताजी को तार निश्चय ही नहीं मिला है और इसीलिए उन्होंने उनके लिए कोई बर्फ़-गाड़ी नहीं भेजी है।

उन्होंने एक गाड़ीवान को बुलाया। उसने अपना लंबा चाबुक बकरे की पीठ पर कड़काया और फिर थैलों को उठाकर स्टेशन के भीतर जलपान-घर में ले गया।

जलपान-घर बहुत ही छोटा था। बिक्री की जगह पर एक मोटा-सा समोवार फक-फक कर रहा था, जो लगभग चूक के ही बराबर था। वह कंपकंपा और सनसना रहा था और उसकी गाढ़ी भाप बादल की तरह उठकर लकड़ी की उस छत पर जा रही थी, जहां कुछ छोटी चिड़ियों ने ठंड से बसेरा ले रखा था और चहक रही थीं।



इधर चूक और गेक चाय पी रहे थे, उधर माताजी गाड़ीवान से सौदा कर रही थीं। वह उन्हें उनकी मंज़िल तक पहुंचाने के लिए बहुत बड़ी रक़म मांग रहा था – सौ रूबल। लेकिन सोचो, तो जगह सचमुच बहुत दूर थी। आख़िर किराये पर उनकी रज़ामंदी हो गयी और गाड़ीवान रोटी, सूखी घास और भेड़ की खाल के कोट लेने के लिए अपने घर चला गया।

माताजी ने कहा – "पिताजी को तो मालूम भी नहीं है कि हम पहुंच गये हैं। हमें देखकर वह कितने हैरान और ख़ुश होंगे!"

चूक ने चाय पीते हुए बहुत ही शांत भाव से कहा – "हां, सचमुच! मुझे भी बड़ी हैरानी और ख़ुशी होगी।"

गेक ने कहा – "और मुझे भी। जानते हो, क्या – हमें वहां चूहों की तरह चुपचाप पहुंचना चाहिए और अगर पिताजी कहीं बाहर गये हुए हों, तो हम थैलों को छिपाकर पलंग के नीचे छिप जायेंगे। वह लौटकर आयेंगे और बैठ जायेंगे और हम सांस रोके रहेंगे। और फिर हम अचानक ज़ोरों से चिल्लाकर उन्हें डरा देंगे।"



माताजी ने कहा – "मैं किसी पलंग के नीचे छिपने या चिल्लानेवाली नहीं। तुम्हीं छिपना और चिल्लाना। चूक, तू अपनी जेब में चीनी क्यों भर रहा है? वह वैसे ही भरी पड़ी है – तूने तो इसे पूरा घूरा बना रखा है।"

चूक ने शांतिपूर्वक समझाया – "यह घोड़ों को खिलाने के लिए है। गेक, अच्छा हो कि तू भी एक डबल रोटी साथ रख ले। तेरे पास कभी कुछ नहीं होता और हमेशा मुझसे ही मांगा करता है।"

जल्दी ही गाड़ीवान वापस आ गया। लंबी-चौड़ी बर्फ़-गाड़ी में यैले रख दिये गये। नीचे सूखी घास बिछा दी गयी और लड़कों को उसमें अच्छी तरह बिठाकर उन्हें कंबलों और भेड़ की खाल के कोटों से ढांक दिया गया।

उन्होंने बड़े शहरों, कारख़ानों, स्टेशनों, गांवों और बस्तियों से विदा ली। आगे पहाड़ियों और काले सघन जंगलों का इलाक़ा था।

*   *   *

बर्फ़ीले ताइगा की सुंदरता से अचरज में मुंह खोले दिन ढलने तक वे हंसते-खेलते जाते रहे। लेकिन फिर चूक, जो गाड़ीवान की पीठ की वजह से सड़क को अच्छी तरह नहीं देख पाता था, अशांत हो गया और उसने माताजी से खाने को कुछ मांगा। क़ुदरती तौर पर उन्होंने उसे कुछ भी नहीं दिया। उसका मुंह लटक गया और पास कोई दूसरा काम न होने से वह गेक को गाड़ी के किनारे की तरफ़ धकेलने लगा।

पहले तो गेक चुपचाप विरोध करता रहा। लेकिन फिर वह बरदाश्त नहीं कर सका और उसने चूक पर थूक दिया। चूक ताव में आकर गेक पर टूट पड़ा। लेकिन चूंकि भेड़ की खाल के भारी-भारी कोटों की वजह से उनके हाथ तो चल नहीं सकते थे, इसलिए वे बस अपने कनटोपों से ढंके सिरों को ही आपस में टकराने लगे।

माताजी उनकी तरफ़ देखकर हंस पड़ीं। गाड़ीवान ने घोड़ों पर चाबुक सटकाया और वे हवा से बातें करने लगे। दो रोयेंदार सफ़ेद ख़रगोश फुदककर रास्ते पर आ गये और नाचने लगे।

"ए...!" गाड़ीवान चिल्लाया, "भागो, नहीं तो हम तुम्हें कुचल देंगे!"

नटखट ख़रगोश तेज़ी से जंगल में जा घुसे। तेज़ हवा चेहरों पर लगती हुई जा रही थी। बर्फ़-गाड़ी जब ताइगा में तेज़ी से उतार पर जा रही थी, तो चूक और गेक एक दूसरे से चिपट गये। ऐसा लगता था, जैसे बर्फ़-गाड़ी क़रीब आते हुए नीले पहाड़ों के ऊपर निकलते चांद की तरफ़ भागी जा रही है।

तभी अचानक घोड़े बर्फ़ से ढंकी एक झोंपड़ी के पास अपने आप रुक गये।

बर्फ़-गाड़ी से कूदते हुए गाड़ीवान ने कहा – "रात को हम यहीं रुकेंगे। यह हम लोगों का स्टेशन है।"

झोंपड़ी छोटी, पर मज़बूत थी। उसमें कोई नहीं रहता था।

जल्दी ही केतली में पानी उबलने के लिए रख दिया गया और खाने की चीज़ों से भरा हुआ थैला लाया गया।



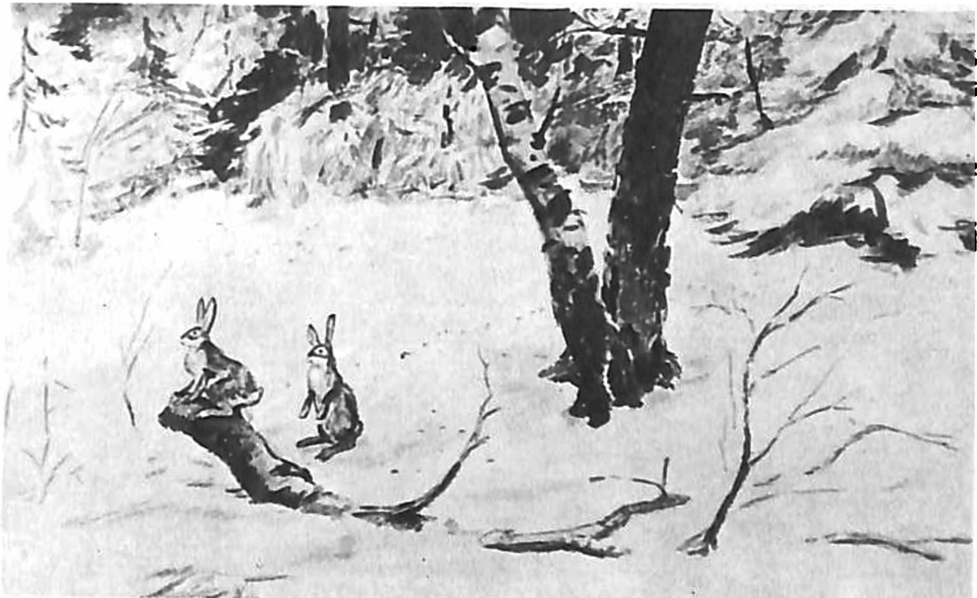
सलामियां इतनी सख़्त और जमी हुई थीं कि उनसे कीलें ठोकी जा सकती थीं। माताजी ने उन्हें गरम पानी में भिगो दिया और रोटी के टुकड़ों को गरम चूल्हे पर रख दिया।

चूल्हे के पीछे ताका-झांकी करने पर चूक को एक टेढ़ा स्प्रिंग मिला। गाड़ीवान ने बताया कि यह जानवरों को पकड़ने के फंदे का एक हिस्सा है।

स्प्रिंग में ज़ंग लगा हुआ था, जिससे यह साफ़ था कि वह काम में नहीं आ रहा था। चूक इसे फ़ौरन समझ गया।

खाना खाने के बाद वे सोने चले गये। दीवाल के पास लकड़ी का एक बड़ा-सा पलंग था। गद्दे की जगह उस पर ढेरों सूखी पत्तियां पड़ी हुई थीं।

गेक न दीवाल के नज़दीक और न बीच में ही सोना चाहता था। उसे दूसरे किनारे पर सोना ही अच्छा लगता था। चाहे उसे बचपन में सुनी यह लोरी अभी तक याद थी – "सो जा मेरे लाल, मेरे दिल के दुलारे, कभी न सोना पलंग के किनारे", फिर भी वह हमेशा बाहरी किनारे पर ही सोया करता था।



अगर वह अपने को बीच में सोया पाता, तो यह तय बात थी कि वह अपने साथ सोनेवालों पर से कंबल हटा देगा, उन्हें अपनी कोहनियां चुभायेगा और अपने घुटने चूक के पेट में गड़ा देगा।

वे कपड़े उतारे बिना ही पलंग पर पड़ गये और उन्होंने अपने को भेड़ की खाल के कोटों से ढंक लिया। चूक दीवाल से सटकर सोया, माताजी बीच में सोयीं और गेक बाहर की तरफ़ सोया।

गाड़ीवान ने मोमबत्ती बुझा दी और ख़ुद चूल्हे के ऊपर बनी जगह पर चढ़ गया। वे सभी तुरंत सो गये। लेकिन रात को गेक को हमेशा की तरह प्यास लगी और वह जग गया।

नींद में ही उसने अपने नमदे के जूते पहने, टटोलकर तिपाई तक पहुंचा, केतली से थोड़ा पानी पिया और फिर खिड़की के पास एक कुरसी पर बैठ गया।

चांद बादलों के पीछे जा छिपा था और खिड़की के बर्फ़ जमे शीशों से बर्फ़ के ढेर नीले-काले दीख रहे थे।



"पिताजी तो जैसे दुनिया के दूसरे छोर पर रहते हैं!" गेक ने सोचा कि दुनिया में कम ही जगहें ऐसी होंगी, जो इससे दूर हों।

अचानक उसने अपना सिर उठाया। उसे लगा कि उसने किसी को खिड़की के बाहर खटखटाते सुना है। न, आवाज़ खटखटाने की नहीं, किसी के भारी पैरों के नीचे बर्फ़ के चरमराने की थी। हां, यही बात है! बाहर अंधेरे में कोई ज़ोरों से सांस ले रहा था, चल रहा था और पैरों को हिला रहा था। गेक को लगा कि यह भालू ही होगा।

"दुष्ट भालू! तू क्या चाहता है? हमें पिताजी के पास पहुंचने में इतनी देर लग रही है और तू हमें हड़प जाना चाहता है, जिससे हम उन्हें फिर कभी न देख सकें? नहीं, तू ऐसा न कर पायेगा। जा, इसके पहले कि कोई तुझे अपनी अचूक बंदूक़ से मार डाले या अपनी तेज़ कटार से तेरा ख़ात्मा कर दे, अच्छा है कि तू भाग जा।"

गेक खिड़की के बर्फ़ ढके शीशों से अपना चेहरा लगाते और नकियाते हुए ये शब्द बुदबुदाया था। उसे डर भी लग रहा था और जानने की इच्छा भी हो रही थी।



लेकिन तभी चांद भागते हुए बादलों के पीछे से निकल आया। नीले-काले बर्फ़ के ढेरों का रंग अब हलका दूधिया हो गया था और गेक ने देखा कि भालू कोई भालू नहीं, बल्कि उनका घोड़ा था, जो खुल गया था और बर्फ़-गाड़ी के आसपास पांव पीटते हुए उस पर रखी सूखी घास को चबा रहा था।

गेक को निराशा हुई। वह रेंगकर खाल के कोटों के नीचे जा घुसा। और चूंकि उसके मन में बुरे विचार आ रहे थे, इसलिए उसने एक बुरा सपना देखा।

गेक डरा, कांपा, सपने में
देख राक्षस प्रलयंकर।
थूक थूकता – जलता पानी,
घूंसे तान दिखाता डर।
सभी ओर लपटें ही लपटें,

पैरों के थे चिह्न बर्फ़ पर।
सेनाएं चल रहीं अकड़ कर –
वे तो दूर दूर से आतीं,
टेढ़े स्वस्तिक वाले झंडे
फ़ासिस्टों के खींचे लातीं।

"रुको! रुको!" गेक चिल्लाया, "तुम ग़लत तरफ़ आ रहे हो! तुम इधर नहीं आ सकते!"

लेकिन न तो कोई रुका, न किसी ने गेक की बातें सुनीं।

ग़ुस्से में आकर उसने टीन की वह सीटी निकाल ली, जो चूक के जूते के डिब्बे में रखी हुई थी और उसे इतने ज़ोरों से बजाया कि बकतरबंद ट्रेन के विचारों में डूबे हुए कमांडर ने झटके से अपना सिर उठा लिया। उसके हाथों के इशारे के साथ उसकी सभी भयानक तोपें एक साथ गरज उठीं।

"शाबाश!" गेक ख़ुशी से चिल्लाया, "इनके लिए एक ही बार काफ़ी नहीं है। और चलाओ, और चलाओ!"

* * *

अपने दोनों प्यारे बच्चों के ऐंठने और मुड़ने-तुड़ने से माताजी की आंख खुल गयी।

वह चूक की ओर मुड़ीं, तो उनकी बग़ल में कोई कड़ी और नुकीली चीज़ चुभी। उन्होंने इधर-उधर टटोलकर उस स्प्रिंग को खींच निकाला, जिसे मितव्ययी चूक सोते हुए भी छिपाकर रखे हुए था।

उन्होंने उसे पलंग के पीछे फेंक दिया। फिर उन्होंने चांदनी में गेक के मुंह पर नज़र डाली और समझ गयीं कि उसे बुरे सपने आ रहे हैं।

लेकिन सपना तो स्प्रिंग नहीं है कि उसे फेंक दिया जाये। हां, उसे भगाया जा सकता है। इसलिए उन्होंने उसकी करवट बदल दी और उसे धीरे-से हिलाते हुए उसके गरम माथे पर फूंक मारने लगीं।

ज़रा ही देर में गेक शांति से सांस लेने लगा और मुसकुरा दिया। इसका मतलब था कि उसके बुरे सपने भाग गये।



इसके बाद माताजी बिस्तर से उतरीं और मोज़े पहने हुए ही खिड़की पर चली गयीं।

सबेरा नहीं हुआ था और आकाश अभी भी तारों से भरा था। कुछ तारे बहुत दूरी पर टिमटिमा रहे थे और कुछ ताइगा के ठीक ऊपर थे।

और अचरज की बात, जिस जगह नन्हा गेक बैठा था, वहां बैठे उन्होंने भी उसी की तरह यही सोचा कि दुनिया में कम ही जगहें इस जगह से ज़्यादा दूरी पर होंगी, जहां उनके साहसी पति आकर रह रहे हैं।

अगले दिन भर उनका रास्ता जंगलों और पहाड़ों से होकर था। अब वे चढ़ाई पर जाते थे, तो गाड़ीवान उतरकर साथ-साथ बर्फ़ में चलता था। लेकिन तेज़ ढालों पर उनकी गाड़ी इतनी तेज़ी से फिसलती कि चूक और गेक को लगता कि गाड़ी, घोड़े और सभी कोई आसमान से गिर रहे हैं।

अंत में, शाम के क़रीब, जब यात्री और घोड़े दोनों ही काफ़ी थक गये थे, गाड़ीवान ने कहा :

"लो, पहुंच गये हम! वहां सामने मोड़ है। और उसके बाद खुली जगह में पड़ाव है। हे! हे! चलो-चलो, ज़ोर से!"

चूक और गेक ख़ुशी से चिल्लाते हुए उछल पड़े। लेकिन तभी गाड़ी को धक्का लगा और वे दोनों धड़ाम से सूखी घास में जा गिरे।

माताजी मुसकुरायीं और उन्होंने उस ऊनी रूमाल को पीछे खिसका दिया, जो उनकी रोयेंदार टोपी पर लिपटा हुआ था।

मोड़ आ गया। गाड़ी ने तेज़ी से मोड़ लिया और हवा के झोंकों से बचे जंगल के एक छोटे-से मैदान में तीन छोटे-छोटे घरों के पास आकर रुक गयी।

लेकिन कैसी अजीब बात थी! न कोई कुत्ता भौंका और न कोई आदमी ही नज़र आया। चिमनियों से धूआं नहीं निकल रहा था। पगडंडियां बर्फ़ से ढंकी हुई थीं और चारों ओर जाड़ों में क़ब्रिस्तान का सा सूनापन छाया हुआ था। जो जानदार चीज़ें नज़र आती थीं, वे सिर्फ़ कुछ चिड़ियां ही थीं, जो पेड़ से पेड़ पर बेवक़ूफ़ी से फुदक रही थीं।

माताजी ने डरी आवाज़ में गाड़ीवान से पूछा – "तुम्हें यक़ीन है कि यही जगह है?"

उसने कहा – "जगह तो यही है। वे तीनों घर ही तीसरा भूवैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र हैं। देखती हैं, खंभे पर तख़्ती लगी है? आपको चौथा केंद्र तो नहीं चाहिए? अगर हां, तो वह यहां से लगभग दो सौ किलोमीटर दूर दूसरी दिशा में है।"

तख़्ती को देखते हुए माताजी ने कहा – "नहीं, नहीं, हमें यही चाहिए। लेकिन सभी दरवाज़ों पर ताले हैं और ड्योढ़ियों में बर्फ़ है। सभी लोग कहां हो सकते हैं?"

गाड़ीवान ने हैरान होते हुए कहा – "यह मैं नहीं कह सकता। पिछले हफ़्ते हम लोग यहां खाने का सामान लाये थे – आटा, प्याज़ और आलू। तब सभी यहीं थे। पहरेदार और प्रधान को छोड़कर वे आठ थे। अजीब गोरखधंधा है! भेड़िये तो उन सबों को खा नहीं सकते। आप रुकिये, मैं जाकर पहरेदार के घर पर नज़र डालता हूं।"

भेड़ की खाल के कोट को फेंक गाड़ीवान बर्फ़ में धसता हुआ सबसे दूर की झोंपड़ी की तरफ़ चल दिया।

वह जल्दी ही वापस आ गया।

"घर तो ख़ाली है, लेकिन चूल्हा अभी भी गरम है। पहरेदार कहीं नज़दीक ही होगा – शायद शिकार पर गया हो। वह रात के पहले ही लौट आयेगा और आप जो चाहें, सब बतला देगा।"

माताजी चिल्लायीं – "वह क्या बतायेगा? मुझे ख़ुद नज़र आ रहा है कि लोगों को गये काफ़ी समय हो गया है।"

गाड़ीवान ने कहा – "यह तो मैं नहीं जानता कि वह क्या बतायेगा, लेकिन आख़िर पहरेदार है, इसलिए कुछ तो बतायेगा ही।"

गाड़ी बड़ी मुश्किल से पहरेदार की झोंपड़ी तक गयी। वहां से जंगल को एक संकरा रास्ता जाता था।

वे ड्योढ़ी में घुसकर बेलचों, झाड़ुओं, कुल्हाड़ियों और डंडों और लोहे के कांटे से टंगी भालू की एक जमी हुई खाल के पास से गुज़रे और कमरे में घुस गये। गाड़ीवान पीछे-पीछे थैलों को लिये आ रहा था।

झोंपड़ी गरम थी।

गाड़ीवान घोड़ों को खिलाने चला गया। माताजी ने चुपचाप डरे हुए लड़कों के कोट उतारने में सहायता दी।

"इतनी दूर आने के बाद पिताजी को न पाना कितना बुरा है!"

माताजी एक बेंच पर बैठ गयीं और सोचने लगीं। आख़िर हुआ क्या है? पड़ाव ख़ाली क्यों है? अब क्या करें? वापस लौट जायें? लेकिन उनके पास सिर्फ़ गाड़ीवान को देने लायक़ पैसे ही थे। उन्हें पहरेदार का इंतज़ार करना होगा। लेकिन गाड़ीवान तीन घंटे बाद चला जायेगा और अगर पहरेदार तब तक नहीं लौटा, तो? सबसे नज़दीकी स्टेशन और तार-घर क़रीब सौ किलोमीटर दूर थे।

गाड़ीवान अंदर आया, कमरे पर निगाह दौड़ायी, नाक सुड़की और फिर चूल्हे पर जाकर भीतर झांका।



उसने उन्हें तसल्ली दी – "पहरेदार रात से पहले ही वापस आ जायेगा। देखिये, यह रहा बंदगोभी के सूप से भरा बरतन। अगर वह कहीं लंबे दौरे पर गया होता, तो सूप को किसी ठंडी जगह में रख जाता। लेकिन आप वही कीजिये, जो आपको ठीक लगे," वह कहता गया, "हालत को देखते हुए मैं आपको बिना किराये के ही स्टेशन वापस ले जा सकता हूं। मैं ऐसा सख़्तदिल नहीं हूं।"

माताजी बोलीं – "नहीं, स्टेशन जाने का कोई फ़ायदा नहीं।"

उन्होंने केतली को फिर से आग पर चढ़ा दिया, सलामियों को गरम किया और खाना-पीना किया। इधर माताजी सामान को ठीक कर रही थीं, उधर चूक और गेक चूल्हे के ऊपर बनी सोने की गरम पटरी पर जा चढ़े। पटरी भोज की टहनियों, भेड़ों की गरम खालों और चीड़ की छीलन की गंध से महक रही थी। चूंकि माताजी चुप और परेशान थीं, इसीलिए चूक और गेक भी चुप थे। लेकिन देर तक चुप रहना मुश्किल था और करने को कुछ और न होने के कारण चूक और गेक जल्दी ही गहरी नींद सो गये।



उन्होंने न गाड़ीवान का जाना सुना और न माताजी का पटरी पर आकर उनकी बग़ल में लेटना ही जाना। उनकी आंख तब खुली, जब झोंपड़ी में काफ़ी अंधेरा हो चुका था। बाहर पैरों की आवाज़ से तीनों ही एक साथ जग पड़े। ड्योढ़ी में कोई चीज़ ज़ोरों की झनझनाहट से गिरी – शायद कुदाल। दरवाज़ा खुला और हाथ में लालटेन लिये पहरेदार अंदर आया। उसके पीछे-पीछे एक बड़ा-सा झबरा कुत्ता था।

उसने पीठ पर से बंदूक़ उतारी, एक मरे हुए ख़रगोश को बेंच पर फेंका और लालटेन को चूल्हे के ऊपर उठाते हुए कहा:

"तुम लोग कौन हो?"

"मैं सेर्योगिन की पत्नी हूं, जो भूवैज्ञानिक दल के प्रधान हैं," माताजी ने उतरते हुए कहा, "और ये उनके बच्चे हैं। चाहो, तो मैं अपने काग़ज़ात दिखा दूं।"

पहरेदार ने अपनी लालटेन चूक और गेक के डरे हुए चेहरों तक उठायी।



"अरे, तुम्हारे काग़ज़ात तो चूल्हे पर हैं। दोनों छोकरे हूबहू बाप की शक़ल के हैं।" चूक की तरफ़ उंगली उठाते हुए उसने कहा – "ख़ासकर यह मोटा छोकरा।"

चूक और गेक को बुरा लगा। चूक को इसलिए कि उसे उसने मोटा कहा था और गेक को कि उसका ख़याल था कि पिताजी से वह चूक से ज़्यादा मिलता है।

मां की ओर देखते हुए पहरेदार बोला – "तुम्हें इस तरह आने की क्या पड़ी थी? तुम्हें नहीं आने को कहा गया था, न!"

"क्या मतलब? हमें किसने नहीं आने को कहा था?"

"तुम लोगों को नहीं आने को कहा गया था। मैं ख़ुद सेर्योगिन का तार स्टेशन ले गया था और उसमें साफ़ लिखा था, 'दो हफ़्ते आना रोक दो। दल फ़ौरन ताइगा जा रहा है।' और जब सेर्योगिन कहते हैं कि 'आना रोक दो', तो इसका मतलब है कि आना रोक दो। तुम लोगों ने आज्ञा तोड़ी है।"

माताजी ने पूछा – "तुम किस तार की बात कर रहे हो? हमें कोई



तार नहीं मिला।" और जैसे गवाही के लिए उन्होंने परेशानी से चूक और गेक की तरफ़ देखा।

लेकिन उन्होंने देखा कि वे एक दूसरे को घबराकर देख रहे हैं और जल्दी-जल्दी दीवाल की तरफ़ खिसक रहे हैं।

लड़कों पर शकभरी निगाह डालते हुए उन्होंने कहा – "बच्चो, मेरे घर के बाहर होने के वक़्त कोई तार आया था?"

सोने की पटरी पर सूखी टहनियां और छीलन सरसरायीं, पर कोई उत्तर न मिला।

माताजी चिल्लायीं – "जवाब दो, मुझे सतानेवालो! जब मैं बाहर थी, तो क्या कोई तार आया था और तुम मुझे देना भूल गये थे?"

कई सैकंड बीत गये। तब अचानक पटरी पर से ज़ोरों से रोने की आवाज़ आयी। चूक की आवाज़ मोटी थी और गेक की आवाज़ पतली और कांपती हुई-सी थी।

माताजी चिल्लायीं – "दुष्ट बच्चो! तुम मेरी जान लेकर ही रहोगे। यह शोर बंद करो और बताओ कि बात क्या है।"

"जान लेना" शब्द सुनते ही चूक और गेक और भी ज़ोरों से चिल्लाने लगे। काफ़ी समय बाद ही उनसे दुखभरी कहानी सुनी जा सकी, जिसमें दोनों में इस बात पर लंबी बहस भी होती रही कि दोष किसका था।

* * *

ऐसे बच्चों के साथ क्या किया जाये? छड़ी से पीटें? बंद कर दें? हाथ-पैर में ज़ंजीरें डालकर मशक़्क़त पर लगा दें? नहीं, माताजी ने इनमें से कुछ भी नहीं किया। उन्होंने बस एक आह भरी और अपने लड़कों को पटरी से उतरने, नाक पोंछने और हाथ-मुंह धोने को कहा। फिर उन्होंने पहरेदार से पूछा कि उसकी राय में उन्हें अब क्या करना चाहिए।

पहरेदार ने कहा कि भूवैज्ञानिक दल अलकाराश दर्रे पर एक ज़रूरी काम से गया है और दस दिन के पहले नहीं लौटेगा।

माताजी ने पूछा – "लेकिन हम दस दिन कैसे रहेंगे? हमारे पास तो खाने का भी सामान नहीं है!"

"तुम्हें किसी तरह गुज़र करनी होगी," पहरेदार ने जवाब दिया। "मैं कुछ रोटी छोड़ जाऊंगा और तुम यह ख़रगोश ले सकती हो – इसकी खाल उतारकर इसे पका लेना। कल मुझे एक-दो दिन के लिए ताइगा में जाना होगा। मुझे जानवरों के फंदे देखने हैं।"

माताजी बोलीं – "मुझे यह अच्छा नहीं लगता। हम यहां अकेले कैसे रह सकते हैं? हमें इस जगह के बारे में कुछ भी पता नहीं और हमारे चारों ओर जंगल और जानवरों के अलावा कुछ भी नहीं है ..."

पहरेदार ने कहा – "मैं तुम्हारे पास एक बंदूक़ छोड़ जाऊंगा। गोदाम में ईंधन है और टीले के पीछे पानी का सोता है। यह रहा अनाज का बोरा। इस डिब्बे में नमक है। तुम्हारे पचड़े में पड़ने का समय मेरे पास नहीं है, समझीं ..."

गेक चूक के कान में बोला – "उफ़, कैसा ख़राब आदमी है। चल, चूक, इसे कुछ सुनायें।"

चूक ने कहा – "हमने ऐसा किया, तो वह हमें घर के बाहर निकाल



देगा। पिताजी के आने तक चुप रहना ही अच्छा है। फिर हम इसकी शिक़ायत कर देंगे।"

"पिताजी के आने तक रुक जायें? लेकिन वह तो बहुत दिन तक नहीं आयेंगे।"

गेक जाकर अपनी मां की गोद में बैठ गया और अपनी भौंहें सिकोड़कर ग़ुस्से से बदतमीज़ पहरेदार की तरफ़ देखने लगा।

पहरेदार ने अपना समूरी कोट उतारा और उस मेज़ के नज़दीक आया, जिस पर लालटेन रखी हुई थी।

तब जाकर ही गेक ने देखा कि कोट के कंधे से कमर तक का पिछला हिस्सा उधड़ा हुआ है।

पहरेदार ने माताजी से कहा – "बंदगोभी का सूप चूल्हे पर है। चम्मच और प्लेटें वहां आलमारी में हैं। बैठकर खाओ। तब तक मैं अपने कोट की मरम्मत कर लूं।"

माताजी ने कहा – "तुम हमारे मेज़बान हो। खाना तुम लाकर रखो



और मरम्मत के लिए अपना कोट मुझे दे दो। मुझे यक़ीन है कि मैं तुमसे अच्छी मरम्मत कर सकती हूं।"

पहरेदार ने माताजी की तरफ़ देखा और उसकी आंखें गेक की नाराज़ीभरी आंखों से जा मिलीं।

पहरेदार बुदबुदाया – "ओह ! हो तुम बहुत अड़ियल !" उसने माताजी को कोट दे दिया और जाकर आलमारी से प्लेटें निकालने लगा।

फटी हुई जगह की तरफ़ इशारा करते हुए चूक ने पूछा – "तुमने इसे ऐसा कहां फाड़ा ?"

पहरेदार ने सूप का बरतन मेज़ पर रखते हुए अनिच्छा से कहा – "एक भालू से टक्कर हो गयी थी। उसी ने पंजा मार दिया।"

पहरेदार के कमरे से चले जाने पर चूक बोला – "सुना तूने, गेक ? इसकी भालू से लड़ाई हुई थी; मेरे ख़याल में इसीलिए आज यह इतने गुस्से में है।"

गेक ने सुन लिया था, मगर उसे यह नहीं पसंद था कि कोई उसकी मां से बुरा व्यवहार करे, चाहे वह ऐसा ही आदमी क्यों न हो, जो भाल से अकेला भिड सकता है।



दूसरे दिन सबेरे ही पहरेदार ने अपने थैले, बंदूक़ और कुत्ते को लिया, स्कीज़ पहने और ताइगा में चल दिया। अब उन्हें अपनी संभाल आप करनी थी।

तीनों पानी भरने गये। टीले के दूसरी तरफ़ सीधी खड़ी चट्टान से बर्फ़ में एक छोटा-सा सोता फूटता था। पानी से ऐसी घनी भाप निकलती थी, जैसे केतली से, लेकिन जब चूक ने सोते में अपनी उंगली डाली, तो पाया कि पानी बर्फ़ की तरह ठंडा है।

फिर वे कुछ लकड़ियां लाये। माताजी को चूल्हे में आग जलाना नहीं आता था और लकड़ियां देर तक आग ही नहीं पकड़ रही थीं। आख़िर जब लकड़ियां जलीं, तो लपटें इतनी गरम थीं कि सामने की दीवाल की खिड़की पर जमी बर्फ़ की मोटी परत फ़ौरन पिघल गयी। अब इससे जंगल का किनारा, पेड़ों की डाल-डाल पर फुदकती चिड़ियां और नीले पहाड़ों की चट्टानी चो-टियां देखी जा सकती थीं।

माताजी मुर्ग़ी के पंख नोचना और उसे साफ़ करना जानती थीं, पर ख़रगोश की चमड़ी उन्होंने पहले कभी नहीं उतारी थी। उस पर जितना समय उन्होंने लगाया, उतने में काफ़ी बड़े जानवर की खाल भी आसानी से उतारी जा सकती थी।

खाल उतारने का काम गेक को बिलकुल पसंद नहीं आया, पर चूक ने शौक़ से इसमें माताजी का हाथ बटाया और उसे ख़रगोश की पूंछ इनाम मिली। यह इतनी हलकी और फुलफुली थी कि चूल्हे के ऊपर की पटरी पर से फेंकने पर यह हवा में पैराशूट की तरह तैरने लगती थी।

खाने के बाद तीनों घूमने निकल गये।

चूक ने माताजी से साथ में बंदूक़ या कम से कम कुछ कारतूस ले लेने के लिए कहा। मगर वह बंदूक़ लेने को तैयार ही न हुईं।

इसके बदले उन्होंने उसे सबसे ऊंची खूंटी पर टांग दिया, फिर एक कुरसी पर चढ़कर कारतूसों को आलमारी के सबसे ऊपरी खाने में रख दिया और चूक को जता दिया कि अगर उसने एक भी कारतूस लिया, तो फिर उसे एक दिन भी चैन से नहीं रहने दिया जायेगा।

चूक का मुंह लाल हो गया और वह वहां से भाग गया, क्योंकि उसकी जेब में एक कारतूस पहले ही से पड़ा हुआ था।

सैर सचमुच अजीब थी! वे एक क़तार में सोते को जानेवाली पगडंडी पर गये। ऊपर नीला आसमान चमक रहा था और नीले पहाड़ों की ऊंची-नीची चट्टानें सपनों में नज़र आनेवाले मीनारों और महलों की तरह दीख रही थीं। चंचल चिड़ियां अपनी चीखों से बर्फ़ीली ख़ामोशी को तोड़ रही थीं। चपल सलेटी गिलहरियां देवदारुओं की घनी शाखाओं में उछल और कूद

रही थीं। पेड़ों के नीचे बर्फ के मुलायम सफ़ेद क़ालीन पर अनजाने जानवरों के पैरों के निशान थे और चिड़ियों ने जादुई नमूने बना रखे थे। अचानक ताइगा से धमाके और चरचराने की एक आवाज़ आयी। बहुत करके किसी पेड़ की चोटी से जमी बर्फ़ का ढेर नीचे गिरा था।

पहले, मास्को में, गेक को लगता था, जैसे सारी दुनिया मास्को, उसकी सड़कों, घरों, ट्रामों और बसों की ही है।

अब उसे लग रहा था कि पूरी दुनिया एक विशाल घना जंगल है।

गेक था भी ऐसा ही – अगर उसके ऊपर सूरज होता, तो उसे यक़ीन हो जाता कि दुनियाभर में कहीं भी न बादल हैं, न बरसात।

वह ख़ुश होता, तो सोचता कि दुनिया में भी सभी ख़ुश होंगे।

* * *

दो दिन बीत गये। तीसरा दिन भी आ गया, पर जंगल से आता पहरेदार नज़र न आया। बर्फ़ से घिरी हुई छोटी-सी झोंपड़ी में घबराहट छायी हुई थी।

शाम को और रात को ज़्यादा डर लगता था। वे कमरे और बरामदे,



दोनों के दरवाज़ों में ताला जड़ देते थे और खिड़कियों को चटाइयों से ढंक देते थे, ताकि रोशनी बाहर से न दीखे और जंगली जानवर खिंचकर झोंपड़ी की तरफ़ न आयें। वैसे करना उन्हें इसका उलटा चाहिए था, क्योंकि जंगली जानवर आदमी जैसे नहीं होते और वे रोशनी से डरते हैं। चिमनी में हवा सनसनाती थी, और बर्फ़ानी आंधी से जब दीवालों पर और खिड़कियों के शीशों से बर्फ़ के टुकड़े टकराते, तो लगता कि कोई वहां खुरच रहा है।

वे चूल्हे के ऊपर की सोने की पटरी पर चढ़ गये और माताजी ने उन्हें तरह-तरह के क़िस्से और परियों की कहानियां सुनायीं। आख़िर वह ऊंघ गयीं।

गेक ने कहा – "चूक, यह कैसी बात है कि जादूगर सिर्फ़ परियों की कहानियों में ही होते हैं? अगर जादूगर सचमुच हों, तो कैसा मज़ा आये?"

"और भूत-प्रेत भी असली ही हों, तो?"

गेक ने चिढ़कर सिर हिलाया और कहा – "भूत-प्रेतों की किसे परवाह है? वे किसी काम के नहीं। लेकिन अगर हम किसी जादूगर को बुला पाते, तो हम उसे पिताजी के पास उड़कर जाने और उन्हें यह बताने के लिए कह सकते थे कि हमें यहां आये काफ़ी दिन हो चुके हैं।"

"लेकिन वह उड़ेगा किस पर?"

"किसी पर... बस अपने हाथ हिला देगा या ऐसा ही कुछ करेगा। परवाह मत करो, वह कोई न कोई तरीक़ा निकाल ही लेगा।"

"अभी ठंड इतनी है कि वह हाथ भी नहीं हिला सकता," चूक ने कहा। "मेरी तरफ़ देख, मैंने दो-दो दस्ताने पहन रखे थे, फिर भी भीतर लकड़ी लाने में मेरे हाथ जम गये।"

"लेकिन, चूक, क्या सचमुच ऐसा होता, तो मज़ा नहीं आता?"

चूक दुविधा में पड़ गया। "मुझे क्या मालूम? हमारे अहाते की बिचली मंज़िल में, जहां मीश्का क्रियूकोव रहता है, वहां जो लंगड़ा रहता था, उसकी याद है? वह मीठी पूरियां बेचा करता था और दुनियाभर की बुढ़ियाएं

अपनी क़िस्मत पूछने के लिए उसके पास आया करती थीं। मतलब यह कि किसकी क़िस्मत अच्छी है और किसकी नहीं, वग़ैरा-वग़ैरा।"

"तो क्या उनकी क़िस्मत वैसी ही निकलती थी?"

"पता नहीं। मैं तो बस यह जानता हूं कि एक दिन पुलिस आयी और उसे ले गयी और उसके घर चोरी की बहुत-सी चीज़ें मिलीं।"

"इससे तो यही पता चलता है कि वह जादूगर था ही नहीं। वह बस ठग था। तेरा क्या ख़याल है?"

"बेशक वह ठग था," चूक ने हामी भरी। "लेकिन मेरे कहने का मतलब यह है कि सभी जादूगर ठग होते हैं। अगर ऐसा आदमी जो चाहता है, वह उसे आसानी से मिल जाता है, तो वह काम क्यों करना चाहेगा? मगर गेक, अब तू सो जा, क्योंकि मैं अब और बात नहीं करूंगा।"

"क्यों?"

"क्योंकि तू बेकार की बातें कर रहा है और फिर तुझे रात को बुरे सपने आयेंगे और तू अपनी कोहनी और घुटने मुझे गड़ायेगा। क्या तू यह सोचता है कि कल रात को मेरे पेट में घूंसे मारकर तूने अच्छा किया? आ, मैं तेरे साथ ऐसा ही करके दिखाता हूं..."

* * *

चौथी सुबह को माताजी को लकड़ियां आप काटनी पड़ीं। ख़रगोश को खाकर वे कभी का ख़त्म कर चुके थे और चिड़ियों ने उसकी हड्डियों को ले जाकर जगह को साफ़ भी कर दिया था। उस दिन उन्होंने बस दलिया ही खाया था, जिसमें सूरजमुखी का तेल और प्याज़ डाले हुए थे। उनकी रोटी ख़त्म हो रही थी, लेकिन माताजी को थोड़ा-सा आटा मिल गया और इससे उन्होंने उनके लिए कुछ बिस्कुट बना दिये।

ऐसे खाने के बाद गेक बहुत ही सुस्त था और माताजी को डर लगा कि कहीं उसे बुख़ार तो नहीं आ गया है।

उन्होंने उसे घर में ही रहने को कहा। फिर उन्होंने चूक को कपड़े

पहनाये, बाल्टियां लीं, एक छोटी-सी बर्फ़-गाड़ी ली और दोनों पानी और सवेरे चूल्हा जलाने के लिए टहनियां लाने चल पड़े।

गेक अकेला रह गया। उसने बहुत इंतज़ार किया। आख़िर वह ऊब गया और फिर दिमाग़ी घोड़े दौड़ाने लगा...

* * *

चूक और माताजी बड़ी देर बाहर रहे। वापसी पर पानीभरी बाल्टियों सहित बर्फ़-गाड़ी उलट गयी और उन्हें लौटकर फिर सोते पर जाना पड़ा। फिर आधी दूर आने पर पता चला कि चूक अपना एक दस्ताना जंगल के छोर पर भूल आया है। वे फिर लौटे। इतने में शाम हो गयी।

आख़िर जब वे घर पहुंचे, तो गेक का कहीं पता नहीं था। पहले उन्होंने सोचा कि वह चूल्हे के ऊपर सोने की पटरी पर भेड़ की खालों के ढेर के नीचे छिपा हुआ होगा; मगर नहीं, वह वहां नहीं था। चूक चालाकी से



मुसकुराया और माताजी के कान में फुसफुसाया कि गेक बेशक़ चूल्हे के नीचे छिपा होगा।

माताजी बहुत ही बिगड़ीं और उन्होंने गेक को फ़ौरन बाहर आने के लिए कहा। मगर गेक ख़ामोश ही रहा।

तब चूक ने चूल्हे की लंबी कुरेदनी ली और उसे चूल्हे के नीचे चारों तरफ़ घुसेड़ने लगा।

लेकिन गेक वहां भी नहीं था।

तब माताजी सचमुच परेशान हो गयीं। उन्होंने दरवाज़े के पास की खूंटी पर नज़र डाली। गेक की टोपी और कोट वहां नहीं थे।

उन्होंने बाहर जाकर घर के चारों ओर देखा। तब वह भीतर आ गयीं और लालटेन जलायी। उन्होंने अंधेरे भंडार-घर में और लकड़ी रखने की जगह में भी देखा।

उन्होंने गेक को पुकारा, उसे डांटा और ललचाया, मगर कोई जवाब न मिला। इसी बीच अंधेरा तेज़ी से बर्फ़ के ढेरों पर छाता जा रहा था।

माताजी फिर घर के अंदर गयीं और उन्होंने खूंटी से बंदूक़ उतारी, कारतूस और लालटेन उठायी और चूक को घर के बाहर न निकलने की हिदायत देकर बाहर दौड़ गयीं।

इन चार दिनों में बर्फ़ पर पैरों के कई निशान बन चुके थे।

वह यह न सोच सकीं कि खोज कहां से शुरू की जाये। मगर उन्होंने सोचा कि गेक अकेले जंगल की तरफ़ नहीं जा सकता, इसलिए उन्होंने रास्ते की तरफ़ जाना ही तय किया।

मगर रास्ते पर कोई भी न था।

उन्होंने बंदूक़ में कारतूस भरा और उसे चलाया। फिर वह ध्यान से सुनने लगीं। इसके बाद उन्होंने दो बार और बंदूक़ चलायी।

अचानक इसके जवाब में काफ़ी नज़दीक से ही बंदूक़ की आवाज़ आयी। कोई मदद के लिए दौड़ा आ रहा था। वह लपककर आगे जाना चाह रही थीं, पर उनके नमदे के जूते बर्फ़ में धंस जाते थे। लालटेन उनके हाथों से छूटकर गिर पड़ी, उसकी चिमनी टूट गयी और रोशनी ग़ायब हो गयी।



अचानक पहरेदार की झोंपड़ी की ड्योढ़ी से एक दहलानेवाली चीख़ की आवाज़ आयी।

यह चूक की आवाज़ थी। जब उसने बंदूक़ की आवाज़ सुनी, तो उसने सोचा कि जिन भेड़ियों ने गेक को खाया था, वे सब माताजी पर हमला कर रहे हैं।

माताजी ने लालटेन फेंक दी और हांफती हुई घर को दौड़ीं। उन्होंने चूक को, जो कोट नहीं पहने हुए था, धक्के देकर घर के अंदर कर दिया और बंदूक़ को एक कोने में फेंक दिया। फिर उन्होंने गिलासभर बर्फ़-सा ठंडा पानी लिया और जल्दी-जल्दी कई घूंट पी लिये।

सीढ़ियों पर चढ़ने की और फिर दरवाज़े बंद होने की आवाज़ हुई। फिर दरवाज़ा खुला। भाप के बादल के साथ घर के अंदर कुत्ता दौड़ता हुआ घुसा और उसके पीछे-पीछे पहरेदार आया।

विना नमस्ते किये ही पहरेदार ने पूछा – "क्या बात है? ये गोलियां क्यों चलायी जा रही हैं?"

"मेरा लड़का खो गया है।" माताजी की आंखों से आंसू तेज़ी से बहने लगे। वह आगे कुछ न कह सकीं।

पहरेदार ने नाराज़गी से कहा – "रुको ज़रा। रोना बंद करो। जब खोया वह? बहुत पहले या अभी-अभी?" उसने कुत्ते को हुक्म दिया – "पीछे हट, दिलेर!" और फिर माताजी से कहा – "बोलो भी, वरना मैं फिर चला जाऊंगा!"

माताजी ने जवाब दिया – "घंटाभर पहले। हम पानी लाने गये हुए थे और जब हम वापस आये, तो वह लापता था। उसने अपना कोट और टोपी पहनी और चला गया।"

पहरेदार ने कहा – "एक घंटे में वह बहुत दूर नहीं जा सकता और अगर वह अपने गरम जूते और कोट पहने हुए है, तो ठंड से जम भी नहीं सकता। इधर आ, दिलेर! सूंघ इसे!"

पहरेदार ने खूंटी पर से गेक का कनटोप उतारा। फिर उसने कनटोप और गेक के बरसाती जूते कुत्ते की नाक के नीचे कर दिये।

कुत्ते ने उन चीज़ों को सावधानी से सूंघा और फिर अपनी होशियारीभरी आंखें उठाकर अपने मालिक को देखा।

पहरेदार ने दरवाज़ा खोलते हुए चिल्लाकर कहा – "इधर से, दिलेर! जा और उसे खोजकर ला।"

लेकिन कुत्ते ने अपनी पूंछ हिलायी और जहां का तहां खड़ा रहा।

पहरेदार ने सख़्ती से कहा – "जा, जा दिलेर! ढूंढ़!"

कुत्ते ने बेताबी से हवा को सूंघा, फ़र्श पर पंजे मारे, मगर ज़रा भी नहीं हिला।

पहरेदार ने नाराज़गी से पूछा – "इतनी उछल-कूद किसलिए?" उसने कनटोप और बरसाती जूतों को फिर उसकी नाक के नीचे किया और फिर उसकी गर्दन के पट्टे को थाम लिया।

मगर दिलेर पहरेदार के पीछे गया ही नहीं। वह वहीं घूमता रहा और फिर ठीक उलटी तरफ़ चल दिया।

वह लकड़ी के एक बड़े बक्स के पास जाकर रुक गया और उसके ढक्कन

को अपने झबरीले पैरों से खुरचने लगा। फिर अपने मालिक की तरफ़ मुड़कर वह तीन बार ज़ोर से भौंका।

पहरेदार ने बंदूक़ हकबकायी मां के हाथों में थमा दी और बक्स के पास जाकर उसका ढक्कन खोल दिया।

वहां, भेड़ की खालों और बोरों के ढेर पर गेक बेख़बर सोया पड़ा था। अपना कोट वह ओढ़े हुए था और टोपी पर उसका सिर था।

जब उसे उठाकर जगाया गया, तो उसकी उनींदी आंखें मिची जा रही थीं। वह समझ नहीं पा रहा था कि उसके बारे में इतना बखेड़ा क्यों किया जा रहा है। मां उसे चूमती और रोती रहीं। चूक इधर-उधर उछलता हुआ उसके हाथ-पैर खींच रहा था।

वह चिल्लाया – "वाह वाह! वाह वाह!"

चूक ने झबरे दिलेर की नाक को चूम लिया था और वह शरमाकर हट गया। वह भी नहीं समझ पा रहा था कि बात क्या है। उसने अपनी पूंछ हिलायी और मेज़ पर रखे रोटी के टुकड़े को लालचभरी आंखों से देखा।

हुआ यह था कि जब माताजी और चूक पानी लाने गये, तो गेक को बहुत अकेलापन लगने लगा और उसने उनके साथ एक अच्छा मज़ाक़ करने की सोची। अपना कोट और टोपी लेकर वह बक्स में घुस गया। उसने सोचा कि उनके आने तक वह बक्स में रहेगा और जब वे उसे ढूंढ़ने लगेंगे, तो वह बक्स के अंदर से इतनी ज़ोर से चिल्लायेगा कि वे डर जायेंगे। लेकिन उनके आने में बहुत देर लग गयी। वह कुछ देर तक शांत पड़ा रहा और फिर बिना जाने ही उसे नींद आ गयी।

अचानक पहरेदार उठ खड़ा हुआ और उसने मेज़ पर एक भारी चाभी और एक नीला लिफ़ाफ़ा पटक दिया।

उसने कहा – "यह तुम्हारे लिए है। यह हमारे प्रधान सेर्योगिन के कमरे और भंडार-घर की चाभी है और यह उनकी चिट्ठी है। चार दिन में वह अपने दल के साथ वापस आयेंगे – ठीक नये वर्ष के अवसर पर।"

तो यह चिड़चिड़ा और सख़्त लगनेवाला बूढ़ा इस काम पर गया हुआ

था! उसने कहा था कि उसे अपने फंदे देखने हैं और इसके बदले वह इतनी दूर अलकाराश दर्रे पर गया था!

पत्र को खोले बिना ही माताजी उठीं और उन्होंने अहसान में अपना हाथ पहरेदार के कंधे पर रख दिया।

मगर बदले में वह बस नाराज़गी से बड़बड़ाने लगा गेक पर इसलिए कि उसने बक्स में बारूद का डिब्बा उलट दिया था, और माताजी पर लालटेन तोड़ने के लिए। वह बड़ी देर तक लगातार बड़बड़ाता रहा, मगर अब किसी को इस बूढ़े और भले आदमी का डर नहीं था। माताजी ने गेक को पूरी शाम अपनी आंखों से ओझल नहीं होने दिया और अगर उन्हें ज़रा भी लगता कि गेक कहीं जा रहा है, तो वह उसका हाथ पकड़ लेतीं, जैसे उन्हें डर था कि गेक अचानक लापता हो जायेगा। माताजी गेक के साथ इतना अच्छा बरताव कर रही थीं कि चूक को अफ़सोस होने लगा कि उसने भी बक्स में घुसने की बात क्यों नहीं सोची।

* * *

असली मज़ा तो अब शुरू हुआ। अगली सुबह पहरेदार ने पिताजी का कमरा खोला। उसने चूल्हे को गरमाया और उनका सामान वहां ले आया। कमरा बड़ा और रोशनी से भरपूर था, मगर उसमें सभी कुछ उलटा-सीधा पड़ा हुआ था।

माताजी फ़ौरन सफ़ाई करने में लग गयीं। दिनभर वह चीज़ों को इधर-उधर हटाती, धोती और झाड़ती-पोंछती रहीं।

शाम को जब पहरेदार लकड़ी लाया, तो वह हैरानी में ड्योढ़ी पर ही खड़ा रह गया। कमरा इतना साफ़ था कि उसे अंदर क़दम भी रखने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

लेकिन दिलेर बिना रुके सीधे अंदर आ गया। वह अभी-अभी साफ़ किये फ़र्श पर से होता हुआ गेक की तरफ़ आया और अपनी ठंडी नाक से उसे छूने लगा, मानो कह रहा हो – "पगले! मैंने तुझे खोजा था। बदले में मुझे कुछ खाने को दे, न!"



माताजी ने दिलेर की तरफ़ सलामी का टुकड़ा फेंका। उस पर पहरेदार बड़बड़ाने लगा कि अगर ताइगा में कुत्तों को सलामी खिलायें, तो यहां की चिड़ियां भी हंस पड़ेंगी।

माताजी ने उसे भी एक बड़ा-सा टुकड़ा दिया। उसने कहा – "धन्यवाद!" और अपने से ही कुछ बड़बड़ाता और सिर हिलाता हुआ बाहर चला गया।

* * *

अगले दिन उन्होंने नये वर्ष का पेड़ लगाने की सोची।

सजावट के लिए उन्होंने क्या-क्या नहीं इस्तेमाल किया।

उन्होंने पुरानी पत्रिकाओं के सभी रंगीन चित्र निकाल लिये। चिथड़ों और रुई से उन्होंने जानवर और गुड़ियां बनायीं। पिताजी की मेज़ से उन्होंने सभी पतले काग़ज़ निकाल लिये और उनसे सुंदर फूल बनाये।

लकड़ी लाने के बाद पहरेदार चाहे गुमसुम और नाराज़ था, फिर भी दरवाज़े पर खड़ा होकर वह उनकी सूझ पर अचरज करता रहा।



आखिर वह अपने आपको न रोक सका। उसने उन्हें चाय के पैकेटों की कुछ पन्नी और मोम, जो जूता बनाने के काम से बच गया था, लाकर दिया।

क्या मज़ा आया! सजावट का कारख़ाना फ़ौरन मोमबत्ती बनाने का कारखाना बन गया। मोमबत्तियां भद्दी और देखने में ख़राब थीं, पर वे जलती उतनी ही चमक से थीं, जितनी कि शहरों की दूकानों की सबसे अच्छी मोमबत्तियां।

अब बस पेड़ की ही कमी थी। माताजी ने पहरेदार से उसकी कुल्हाड़ी मांगी। उसने कोई जवाब नहीं दिया, मगर खड़ा हुआ, स्कीज़ पहने और जंगल में चला गया। आधे घंटे के भीतर वह लौट आया।

आप जो चाहें, कह सकते हैं – कह सकते हैं कि सजावट बहुत दिलकश नहीं थी, या कपड़े के ख़रगोश बिल्लियों जैसे ज़्यादा लगते थे, या गुड़ियां सब एक जैसी थीं – सीधी नाक और बाहर निकली आंखोंवाली। पन्नी में लिपटे चीढ़ के फल दूकानों के रंगीन शीशे के लट्टुओं की तरह नहीं चमकते

थे। मगर चीढ़ का पेड़! —पूरे मास्को में ऐसा एक भी पेड़ न था! इसमें ताइगा की असली सुंदरता थी—लंबा और शानदार, जिसकी टहनियों पर हरे सितारे जड़े थे।

* * *

चार दिन कैसे बीत गये, उन्हें पता न चला। और फिर नव वर्ष से पहले के दिन का आगमन हुआ।

सुबह ही से चूक और गेक को घर में खदेड़ा न जा सका। उनकी नाकें नीली हो गयी थीं, मगर वे पिताजी और उनके साथ के लोगों के किसी क्षण आ पहुंचने की आशा में सर्दी में भटकते रहे। पहरेदार ने, जो हमामघर को गरम करने में लगा हुआ था, कहा कि वे बेकार अपने को सर्दी में जमा रहे हैं, क्योंकि दल खाने के समय के पहले नहीं आ सकता।

और हुआ भी बिलकुल यही। जैसे ही वे मेज़ पर बैठे कि पहरेदार ने खिड़की खटखटायी। जैसे-तैसे अपने कोट पहनकर तीनों ड्योढ़ी में लपके।

पहरेदार ने कहा—"अब ज़रा आंख जमाओ; कुछ ही सेकंड में तुम लोग उन्हें उस बड़ी चोटी की दाहिनी तरफ़ के ढाल पर देखोगे, इसके बाद वे फिर ताइगा में ग़ायब हो जायेंगे, और तीस मिनट के भीतर वे घर में होंगे।"

और इसी तरह हुआ भी। दर्रे में पहले सामानों से लदी हुई कुछ बर्फ़-गाड़ियों में जुते कुत्तों का एक दल दिखायी दिया। उनके पीछे बर्फ़ पर तेज़ी से स्कीज़ पर फिसलते लोगों का एक दल आया।

बड़े-बड़े पहाड़ों के आगे वे बहुत ही छोटे दीखते थे, लेकिन उनके हाथ, पैर और सिर साफ़-साफ़ दिखायी दे रहे थे।

नंगी ढाल पर फिसलकर वे जंगल में ग़ायब हो गये।

ठीक आधे घंटे बाद कुत्तों के भौंकने, चिल्लाने और बर्फ़-गाड़ी के चलने की आवाज़ नज़दीक ही सुनी जा सकती थी।



घर को नज़दीक जान भूखे कुत्ते जंगल से तीर की तरह निकले। और उनके पीछे, उसी चाल से नौ आदमी स्कीज़ पर आ रहे थे।

जब लोगों ने माताजी, चूक और गेक को ड्योढ़ी में देखा, तो उन्होंने अपनी छड़ियां हवा में हिलायीं और ज़ोर से किलकारी लगायी।

गेक अब इंतज़ार न कर सका और वह सीढ़ियों पर से कूद पड़ा। घुटने-घुटने गहरी बर्फ़ को रौंदते हुए वह दाढ़ीवाले लंबे आदमी की तरफ़ दौड़ा, जो दल का अगुआ था और जो सबसे ज़ोर से चिल्ला रहा था।

* * *

बाक़ी पूरा दिन पुरुषों ने नहाने, हजामत बनाने और सफ़ाई करने में लगाया।

और शाम को वे सब नये वर्ष की खुशीभरी दावत में इकट्ठा हुए। मेज़ सजा दी गयी, लैंप बुझा दिया गया और मोमबत्तियां जला दी



गयीं। लेकिन चूंकि चूक और गेक के अलावा सभी बड़े थे, इसलिए उन्हें यह पता न था कि इसके बाद क्या किया जाये।

ख़ुशी की बात थी कि एक आदमी के पास अकॉर्डियन था। उसे लाकर उसने नाच की एक धुन छेड़ दी। सभी कोई उछल पड़े और नाचने लगे। सभी अच्छा नाचे – ख़ासकर जब वे माताजी के साथ नाचते थे।

लेकिन पिताजी नाचना नहीं जानते थे। वह बहुत लंबे और बड़े, और ख़ुश मिज़ाज थे। और नाचना तो क्या, उनका फ़र्श पर चलना ही आलमारी में रखे बरतनों को झनझनाने के लिए काफ़ी था।

उन्होंने चूक और गेक को अपने घुटनों पर बैठा लिया और वे ज़ोरों से तालियां बजा-बजाकर हर किसी की तारीफ़ करते रहे।

जल्दी ही नाच समाप्त हो गया। गेक से गाना सुनाने के लिए कहा गया। गेक की ख़ुशामद करने की ज़रूरत नहीं थी। वह जानता था कि वह गा सकता है और इस पर उसे गर्व था।



अकॉर्डियन बजानेवाले ने बाजे पर उसका साथ दिया। मुझे याद नहीं है कि उसने क्या गाना गाया था। लेकिन मुझे यह याद है कि गाना अच्छा था, क्योंकि उसके गाते समय सभी शांत थे। जब वह सांस लेने को रुकता, तो मोमबत्तियों की चटचटाहट और बाहर हवा की सनसनाहट को भी सुना जा सकता था।

जब उसने गाना ख़त्म दिया, तो सभी तालियां पीटने और चिल्लाने लगे। उन्होंने गेक को पकड़ लिया और हवा में उछाला। मगर माताजी ने जल्दी से उसे उनसे छीन लिया, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं जोश में वे उसे छत से ही न टकरा दें।

पिताजी ने अपनी घड़ी को देखते हुए कहा – "अब सभी लोग बैठ जायें। कार्यक्रम का असली भाग अब शुरू होनेवाला है।"

उन्होंने रेडियो चालू कर दिया। सभी बैठ गये और ख़ामोशी से इंतज़ार करने लगे।



शुरू में एकदम शांति थी। फिर उन्होंने शोर और मोटरों के हॉर्न बजने की आवाज़ सुनी। फिर घरघराने और सिसियाने जैसी आवाज़ें आयीं और फिर कहीं बहुत ही दूर से मीठी टनटनाहट गूंजने लगी।

छोटी-बड़ी घंटियों से इस तरह की गूँज निकल रही थी :

टन-टन-टनन-टन !
टन-टन-टनन-टन !

चूक और गेक ने एक दूसरे को देखा। वे जानते थे कि यह कैसी आवाज़ है। यह दूर मास्को से आती क्रेमलिन की स्पास्की मीनार में लाल सितारे के नीचे लगी सुनहरी घड़ियों की झनकार थी।

और नव वर्ष से पहले की सांझ को इस झनकार को लोगों ने — शहरों और पहाड़ों में, स्तेपी और ताइगा में, और नीले समुद्र में — सभी जगह सुना।

और बेशक बकतरबंद ट्रेन के सोच में डूबे कमांडर ने भी अवश्य ही इस झनकार को सुना।

सभी खड़े हो गये। सभी ने एक दूसरे के लिए शुभ नव वर्ष की और तरह-तरह की खुशियों की कामना की।

हर किसी ने खुशी का मतलब अपने-अपने तरीक़े से लगाया। लेकिन हर कोई जानता और समझता था कि उन्हें ईमानदारी से रहना चाहिए, मेहनत से काम करना चाहिए और अपनी विराट और सुखदायी मातृभूमि को प्यार करना चाहिए।

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये :

रादुगा प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार, मास्को,
सोवियत संघ।



